दीना का ननिहाल आगरा में फतेहपुर सीकरी के पास था। उसके नाना और मामा स्टेशन मास्टर थे। नानी उसे बहुत स्नेह करती थीं। दीना अपने ममेरे भाईयों के साथ खेलता खाता पलता रहा।

अचानक एक दिन–

नानाजीः– भगवती प्रसाद नहीं रहे। उनकी संदेहजनक स्थिति में मृत्यु हुई है। बेटी पता नहीं हमारे भाग्य में क्या लिखा है। लेकिन जब तक मैं हूं, तुम खुद को और बच्चों को अनाथ मत समझना।

किन्तु रामप्यारी यह दुःख बरदाश्त नहीं कर पायीं और क्षय रोग का शिकार हो गयी।
7 वर्श के दीना एवं 5 वर्श के शीबू को छोड़कर वह भी चल बसीं।

नानाजी नानी सेः– मां के जाने के बाद से बच्चे बहुत उदास रहते हैं। मैने निर्णय किया है कि रेलवे की नौकरी छोड़कर बच्चों को खुद पालूंगा। तुम और इनकी मामी इन्हें स्नेह दो।